आइजीआइएमएस : 24 घंटे होगा आंखों का इलाज

संवाददाता, पटना

- आंखों में अचानक चोट, दर्द या सर्जरी की जरूर होगी, तो अब पूरी रात तैनात रहेंगे नेत्र रोग विशेषज्ञ
- इमरजेंसी सेवा के साथ ही इनडोर इलाज की व्यवस्था भी होने जा रही है

इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (आइजीआइएमएस) के क्षेत्रीय चक्षु संस्थान में अब जल्द ही 24 घंटे इलाज व सर्जरी की सुविधा होगी. इसमें इसमें 174 बेड होंगे. इमरजेंसी की सुविधा बहाल होने से रात में भी आंख में किसी तरह की परेशानी होने पर भटकना नहीं पड़ेगा. आइजीआइएमएस के उपनिदेशक व क्षेत्रीय चक्षु संस्थान के प्रमुख डॉ विभूति प्रसन्न सिन्हा ने कहा कि नेत्र इमरजेंसी में ट्रॉमा, एक्यूट आइ डिजीज, आंख में अचानक चोट लगना, अचानक रोशनी चले जाना, आंख में दर्द आदि के इलाज की व्यवस्था अब 24 घंटे रहेगी. हाल ही में नये भवन में नेत्र विभाग को शिफ्ट किया गया है, जहां इमरजेंसी सेवा शुरू करने की तैयारी शुरू हो गयी है. यहां इनडोर इलाज की व्यवस्था भी शुरू होने जा रही है. एक छत के नीचे सारी चिकित्सकीय सुविधाएं मिलेंगी. सब कुछ ठीक रहा, तो अगले एक सप्ताह के अंदर यह सुविधा शुरू हो जायेगी.

सालाना तीन लाख मरीजों के इलाज की क्षमता

24 घंटे इमरजेंसी बहाल होने के साथ ही अब इलाज की क्षमता बढ़ा कर न लाख करने की है. यानी एक साल में तीन लाख मरीजों के इलाज की क्षमता होगी, जबकि पहले हर साल पुराने भवन में करीब 1.5 लाख मरीजों का इलाज किया जा रहा था. नये भवन में कॉर्निया ट्रांसप्लांट यूनिट को भी शिफ्ट कर दिया गया है. इसके लिए अलग से चार अतिरिक्त ओपीडी काउंटर पूरी रात खुले रहेंगे. शिफ्ट के अनुसार इन कर्मियों की ड्यूटी लगायी जायेगी.

नये भवन में नेत्र रोग विभाग शिफ्ट होने के बाद मरीजों की संख्या व आधुनिक सुविधाओं में वृद्धि हुई है. यहा 24 घंटे आंख के मरीजों के इलाज की तैयारी पूरी कर ली गयी है. इसके शुरू होने के बाद किसी भी तरह की दुर्घटना या इमरजेंसी होने पर मरीजों को सीधे यहां इमरजेंसी में भर्ती कर दिया जायेगा. ओपीडी के अलावा अगर रात में सर्जरी की जरूर पड़ती है, तो रात में ऑपरेशन भी कर दिया जायेगा. 24 घंटे ओटी व इमरजेंसी बहाल रहेंगी.

डॉ विभूति प्रसन्न सिन्हा, उपनिदेशक व चीफ क्षेत्रीय चक्षु संस्थान, आइजीआइएमएस

समाज की तबाही और हमारी चुप्पी

मादक पदार्थों का सेवन केवल व्यक्ति की निजी कमजोरी नहीं, बल्कि मानवता के विरुद्ध सबसे बड़ा अपराध है। यह प्रवृत्ति शहरों के क्लबों, पार्टियों और रेव-संस्कृति तक सीमित नहीं रही, बल्कि दूरस्थ गांवों और कस्बों तक पांव पसार चुकी है। सबसे चिंता की बात यह है कि यह सब कुछ हमारे सामाजिक ढांचे का अभिन्न अंग बनता जा रहा है। वैसे यह समस्या भारत तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अनेक देशों में भी नशीली दवाओं की तस्करी खासकर युवाओं में नशीले पदार्थों के सेवन की प्रवृत्ति तेजी से बढ़ रही है।

नशीले पदार्थों की तस्करी पर प्रतिबंध लगाने के उद्देश्य से प्रति वर्ष 26 जून को 'अंतरराष्ट्रीय नशा एवं मादक पदार्थ निषेध दिवस' मनाया जाता है, लेकिन 36 वर्षों से यह दिवस मनाते रहने के बावजूद नशे की तस्करी पर लगाम कसे जाने की बजाय यह समस्या दुनिया भर में विकराल होती गई है। चिंताजनक स्थिति यह है कि भारत में तो नशे का धंधा अब देश के नामी-गिरामी शिक्षण संस्थानों तक फैल चुका है। बड़े शहरों की रेव पार्टियां, जहां महंगे होटल और फार्म हाउसों में धुआं, शराब और कोकीन की गंध में आधुनिक युवा वर्ग डूबा होता है, इस विघटन की वीभत्स तस्वीरें पेश करती हैं। राजनीतिक संरक्षण और प्रशासनिक शिथिलता ने इन पार्टियों को लगभग 'छूट प्राप्त अड्डों' में बदल दिया है, जहां पुलिस की कार्रवाई महज दिखावा बन कर रह जाती है। रईसजादों के लिए नशे की संस्कृति 'स्टेटस सिंबल' और 'मॉडर्निटी' का पर्याय बन गई है। कोकीन जैसे पदार्थ, जिनमें गंध तक नहीं होती, उनके लिए नया फैशन स्टेटमेंट हैं, बिना यह समझे कि ये पदार्थ तंत्रिका तंत्र पर सीधा प्रहार करते हैं, और धीरे-धीरे शरीर और आत्मा को खोखला कर देते हैं। इस भयावह स्थिति को बढ़ावा देने वाला माध्यम है इंटरनेट। सूचना क्रांति का यह माध्यम नशीली दवाओं की उपलब्धता और प्रचार-प्रसार का प्लेटफॉर्म बन गया है।

भारत में नशीले पदार्थों का सेवन करने वालों में कॉलेज छात्रों की भागीदारी चालीस प्रतिशत से अधिक है, और इस आंकड़े में लड़कियों की संख्या भी चिंताजनक स्तर तक बढ़ चुकी है। अनेक कॉलेज परिसरों में स्थिति यह है कि छात्र अपने ही परिसर में नशा खरीद सकते हैं, जो

किसी संगठित गिरोह की गतिविधि से कम नहीं। छात्रों का नशे की ओर झुकाव कई कारणों से होता है-साथियों के दबाव, मॉडर्न दिखने की चाह, रोमांच की तलाश या फिर अवसाद, चिंता और मानसिक अकेलेपन की स्थिति में। चौंकाने वाली बात यह है कि वे दवाएं, जिन्हें मानव जीवन की रक्षा के लिए बनाया गया था, अब नशे के औजार के रूप में इस्तेमाल की जा रही हैं। नशीली दवाओं के सेवन से शरीर पर अनेक घातक प्रभाव होते हैं-भूख मर जाना, वजन कम होना, आंखों में लाली और सूजन, कंपकंपी, नींद न आना, चिड़चिड़ापन, अवसाद, ध्यान केंद्रित करने में असमर्थता और यहां तक कि एड्स जैसे संक्रमणों का खतरा भी। मादक पदार्थों का सेवन धीरे-धीरे व्यक्ति की इच्छाशक्ति को इस हद तक खत्म कर देता है कि वह इनका गुलाम बन जाता है। प्रारंभिक प्रयोग के बाद व्यक्ति पहले जैसी अनुभूति के लिए मात्रा बढ़ाता है और ऐसी अवस्था में पहुंच जाता है, जहां उसका अस्तित्व इन पर निर्भर हो जाता है।

समाज में व्याप्त यह भ्रांति कि नशे से सृजनात्मकता, सोचने की शक्ति, एकाग्रता और यौन शक्ति में वृद्धि होती है, भ्रामक और खतरनाक मिथक है। असलियत तो यह है कि नशे की गिरफ्त में व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी सोच-विचार की स्पष्टता खो देता है, उसकी निर्णय-क्षमता खत्म हो जाती है और उसके कार्यों में तालमेल टूट जाता है। कोई भी रसायन, जो व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक क्रिया-प्रणाली में बदलाव लाए, मादक पदार्थ कहलाता है।

देश में नशे का सबसे गंभीर पहलू यह है कि भारत नशे का उपभोक्ता नहीं, बल्कि अंतरराष्ट्रीय तस्करी के नक्शे पर प्रमुख 'ट्रांजिट रूट' भी बन चुका है। अफगानिस्तान, पाकिस्तान, म्यांमार, ईरान और चीन जैसे देशों से होते हुए भारत के रास्ते मादक पदार्थ पश्चिमी बाजारों तक पहुंचते हैं। इंटरनेशनल नारकोटिक्स कंट्रोल बोर्ड की एक रिपोर्ट भी इस बात की पुष्टि करती है कि भारत की भौगोलिक स्थिति तस्करों के लिए सबसे सुगम मार्ग है। यह व्यापार अब वैश्विक अर्थव्यवस्था का 15 प्रतिशत हिस्सा बन चुका है। भारत में इस पर लगाम लगाने के लिए नारकोटिक्स एक्ट जैसे कठोर कानून मौजूद हैं, लेकिन अपराधी अक्सर इन कानूनों की कमियों का लाभ उठा कर बच निकलते हैं। हमें स्वीकार करना होगा कि नशा अब व्यक्तिगत समस्या नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आपदा है। इस आपदा से लड़ने का एक ही रास्ता है जनचेतना, सहयोग और सामूहिक संकल्प। यही वह क्षण है, जब हमें यह प्रण लेना होगा कि हम नशे के हर रूप, हर स्रोत और हर समर्थन के खिलाफ खड़े होंगे, बिना डरे, बिना रुके।

आईजीआईएमएस में 24 घंटे होगी आंखों की सर्जरी

- चार अतिरिक्त ओपीडी काउंटर पूरी रात खुलेंगे
- क्षेत्रीय चक्षु संस्थान में 24 घंटे इमरजेंसी चलेगी

पटना, प्रधान संवाददाता। आईजीआईएमएस के क्षेत्रीय चक्षु संस्थान (रियो) में अब 24 घंटे आंखों के इलाज की सुविधा मिलेगी। कुछ दिनों में यहां 24 घंटे की इमरजेंसी सेवा शुरू होगी। इससे रात में भी आंख में चोट या अन्य परेशानी होने पर मरीजों को इलाज के लिए भटकना नहीं होगा। वे यहां आकर अपना इलाज करा सकेंगे।

संस्थान के उपनिदेशक व रियो सेंटर के प्रभारी डॉ. विभूति प्रसन्न सिन्हा ने बताया कि नेत्र इमरजेंसी में ट्रॉमा, आंखों की गंभीर बीमारी, आंख में अचानक चोट, अचानक रोशनी जाने, आंख में दर्द आदि के इलाज की व्यवस्था अब 24 घंटे मिलेगी। अगले एक सप्ताह में रियो के नवनिर्मित भवन में ये सेवाएं शुरू होंगी। डॉ. विभूति ने बताया कि संस्थान के नेत्र रोग विभाग में इलाज की क्षमता प्रतिवर्ष तीन लाख तक करने की योजना है। नए भवन में कॉर्निया ट्रांसप्लांट यूनिट भी शिफ्ट कर दी गई है। इसके लिए अलग से चार अतिरिक्त ओपीडी काउंटर पूरी रात खुले रहेंगे। शिफ्ट के अनुसार यहां कर्मियों की ड्यूटी लगाई जाएगी।

Thursday, June 26, 2025
PATNA

Rare heart surgery gives six-year-old new lease of life

Hindu Bureau
NEW DELHI

Ayansh with a relative after the surgery. SPECIAL ARRANGEMENT

Doctors at BLK-Max Super Speciality Hospital in Delhi successfully performed a minimally invasive procedure recently on a six-year-old boy, from a remote village in Haryana, who was born with a rare and life-threatening heart defect.

The boy, Ayansh, had a single functional heart chamber, a condition affecting less than 1% of children with congenital heart defects. A normal heart has four chambers that regulate the circulation of oxygenated and deoxygenated blood throughout the body and lungs.

Ayansh reported symptoms such as fatigue, and his lips and fingers would often turn blue due to severely low oxygen levels in his blood. This was caused by the absence of the right side of the heart, which is responsible for pumping deoxygenated blood to the lungs. This condition, known as single ventricle physiology, resulted in the mixing of oxygenated and deoxygenated blood in his body, depriving him of the oxygen he needed.

A team of doctors, led by Gaurav Garg, Associate Director of Paediatric Cardiology at BLK-Max Super Speciality Hospital's Heart and Vascular Institute, successfully performed the Transcatheter Fontan procedure on the young patient. This minimally invasive intervention was carried out entirely through a small incision in the groin, avoiding the need for open-heart surgery. The doctors used catheters and wires to reach the heart and place a covered stent in it.

'Safer option'

"He had already undergone the first stage of treatment, known as the Glenn procedure, when he was just six months old, in which blood flow from the upper body was redirected to the lungs, bypassing the malformed right heart. The final stage – the Fontan – is usually a high-risk surgery done around this age. Traditionally, this is a high-risk, open-heart surgery involving re-operation on the chest, with significant risks of bleeding, infection, pain, and prolonged hospitalisation. Considering the child's age and the complexity of the case, we opted for Transcatheter Fontan – a safer, minimally invasive alternative," Dr. Garg said.

The procedure brought significant relief to Ayansh and his family members. Within days, his oxygen levels began to increase, and the bluish tint on his skin started to fade, he said.

पटना फ्रंट पेज

dainikbhaskar.com

P.R.O.

www.jagran.com

आइजीआइएमएस में अब 24 घंटे होगी इमरजेंसी नेत्र सर्जरी

जागरण संवाददाता, पटना : आइजीआइएमएस के क्षेत्रीय चक्षु संस्थान को पूर्वोत्तर भारत का सबसे उत्कृष्ट संस्थान बनाने का कार्य अब अंतिम चरण में है। 174 बेड के चक्षु संस्थान में जल्द ही सातो दिन 24 घंटे उपचार की सुविधा शुरू हो जाएगी। यही नहीं सात से दस दिन में यहां दो माड्यूलर आपरेशन थिएटर, लैब सर्विस, रिसर्च विंग के साथ दृष्टिहीनता की जल्द पहचान व नवजात तक की जांच में सक्षम अत्याधुनिक इलेक्ट्रोफिजियोलाजी मशीन से भी सुसज्जित हो चुका है। संस्थान के उप निदेशक व क्षेत्रीय चक्षु संस्थान के चीफ डा. विभूति प्रसन्न सिन्हा ने बताया कि इमरजेंसी में ट्रामा, एक्यूट आई डीजिज, अचानक रोशनी जाने, आंख में तेज दर्द समेत सभी नेत्र रोगों का इलाज 24 घंटे होगा। नवनिर्मित भवन में ये सेवाएं शुरू करने की तैयारी अब अंतिम चरण में है और सात से दस दिन में विधिवत उद्घाटन कराने की योजना है। नेत्र संबंधी किसी भी चिकित्सकीय आपात के लोगों को सोमवार से भर्ती कर परीक्षण शुरू किया जा सकता है। जरूरत होने पर रात में भी सर्जरी की जाएगी।

ओपीडी के बाद नए भवन में इमरजेंसी शुरू होने के बाद वर्ष में तीन लाख मरीजों के उपचार करने का लक्ष्य है। पुराने भवन में करीब 1.5 लाख मरीजों का इलाज किया जा रहा था। ओपीडी के चार अतिरिक्त काउंटर भी पूरी रात खुले रहेंगे। नए भवन में कार्निया ट्रांसप्लांट यूनिट भी शिफ्ट हो गई।

क्षेत्रीय चक्षु संस्थान ● जागरण

क्षेत्रीय चक्षु संस्थान में अब इमरजेंसी की अपनी ओटी शुरू होगी, डाक्टर इसी वार्ड में रहेंगे। अत्याधुनिक उपकरण, माइयूलर ओटी, स्पेशल इमरजेंसी वार्ड सब तैयार हैं। सोमवार से नए वार्ड में उपचार का ट्रायल किया जाना है।

डा. विभूति प्रसन्न सिन्हा, उपनिदेशक सह चीफ क्षेत्रीय चक्षु संस्थान

ये सुविधाएं हैं क्षेत्रीय चक्षु संस्थान : पांच सुपर स्पेशियलिटी विभाग, 19 एचडीयू, 11 आपरेशन थिएटर, 170 कार व 200 स्कूटर-बाइक के लिए पार्किंग, इमरजेंसी रैंप, इमरजेंसी, ओपीडी, इंडोर जाने के लिए अलग रास्ता, फार्मेसी, आई बैंक, कैफेटेरिया, लाइब्रेरी आदि।

लैंसेट रिपोर्ट • भारत समेत 8 देशों में टीकाकरण में असमानता

दुनिया में 1.57 करोड़ बच्चे बिना टीका के, इनमें भारत के 14 लाख

भास्कर न्यूज | लंदन

मेडिकल जर्नल लैंसेट में प्रकाशित एक नई रिपोर्ट के मुताबिक, 2023 में दुनिया भर में 1.57 करोड़ बच्चे ऐसे थे जिन्हें जीवन रक्षक डीटीपी (डिप्थीरिया, टेटनस, और पर्टूसिस) वैक्सीन की एक भी डोज नहीं मिली। इनमें से 14 लाख बच्चे भारत के थे। रिपोर्ट बताती है कि दुनिया के आधे से अधिक जीरो-डोज बच्चे सिर्फ 8 देशों में हैं। इनमें भारत, नाइजीरिया, ब्राजील, इंडोनेशिया, पाकिस्तान, डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ कॉन्गो, सूडान और सोमालिया शामिल हैं। इन देशों में लंबे समय से स्वास्थ्य व्यवस्था में निवेश की कमी, राजनीतिक अस्थिरता, और शिक्षा की कमी बताई गई है। ग्लोबल बर्डन ऑफ डिजीज 2023 वैक्सीन कवरेज कोलैबोरेटर टीम ने इस रिपोर्ट में 1980 से 2023 के बीच 204 देशों और क्षेत्रों में 11 वैक्सीन डोज की कवरेज का विश्लेषण किया है।

रिपोर्ट बताती है कि टीकाकरण की दिशा में 50 वर्षों में प्रगति हुई है लेकिन अभी भी असमानता गहरी है। कोरोना महामारी, गलत सूचना और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी ने इस प्रगति को धीमा या उल्टा कर दिया है। रिपोर्ट चेतावनी देती है कि अगर यह समस्या दूर नहीं हुई तो खसरा, पोलियो व डिप्थीरिया जैसे रोग फिर से महामारी का रूप ले सकते हैं।

100 देशों में खसरा वैक्सीनेशन दर गिरी

1980 में, दुनिया भर में 5.88 करोड़ बच्चे ऐसे थे जिन्हें कोई भी बचपन का वैक्सीनेशन नहीं मिला था। इनमें से 53.5% बच्चे केवल पांच देशों भारत, चीन, इंडोनेशिया, पाकिस्तान और बांग्लादेश से थे। चार दशकों में वैश्विक स्तर पर वैक्सीनेशन कवरेज दोगुना हुआ है और 2019 तक जीरो डोज बच्चों की संख्या घटकर 1.47 करोड़ रह गई। लेकिन 2010 के बाद से यह गति कई देशों में धीमी हो गई है। 2010 से 2019 के बीच 204 में से 100 देशों में खसरा वैक्सीनेशन दर गिरी। यहां तक कि उच्च-आय वाले 36 में से 21 देशों में भी कम से कम एक वैक्सीन की कवरेज घटी है। यह दर्शाता है कि वैक्सीनेशन अब सिर्फ निम्न और मध्यम आय वाले देशों की चुनौती नहीं रह गई, बल्कि वैश्विक चिंता बन चुकी है।

2030 से कोसों दूर लक्ष्य, 18 देश ही पूरा कर सके

संयुक्त राष्ट्र और डब्ल्यूएचओ का लक्ष्य है कि 2030 तक 'जीरो-डोज' बच्चों की संख्या को 2019 की तुलना में आधा किया जाए। लेकिन लैंसेट रिपोर्ट बताती है कि अब तक सिर्फ 204 में से 18 देश ही इस लक्ष्य को प्राप्त कर पाए हैं। अफ्रीका और दक्षिण एशिया के देशों में यह संकट और गंभीर है।

वैक्सीनेशन में गिरावट के पीछे कौन से बड़े कारण?

रिपोर्ट में वैक्सीनेशन में गिरावट के पीछे कोविड महामारी के बाद हेल्थ सिस्टम पर बढ़ा बोझ बताया गया है। सूडान और डीआर कांगो में राजनीतिक अस्थिरता और युद्धग्रस्त भी वजह है। साथ ही टीकाकरण पर खर्च कम करना या प्राथमिकता में न रखना व हेल्थ वर्कर्स की कमी भी वजह है।

INDIRA GANDHI INSTITUTE OF MEDICAL SCIENCES
(An Autonomous Institute of Govt. of Bihar)
Sheikhpura, Patna-800014 (Bihar, India)
Tel.: 0612-2297631, 2297099, Fax : 0612-2297225. Website : www.igims.org
E-Mail : director@igims.org

Tender Inviting Notice

Sealed Tender (under two bid system i.e. Technical & Financial bids) is invited from manufacturers or their authorized agents for **Multicolour Printing on Rate Contract Basis to IGIMS - Patna.**
Complete sealed tender should be sent to the **"Director, IGIMS, Sheikhpura, Patna-800014** by Regd./Speed Post/Courier to reach by 22/07/2025 at 16.00 hrs.
Details Terms and Conditions and tender documents can be seen and downloaded from Institute website **www.igims.org**

Sd/-
Director, IGIMS, Patna

Tender Notice No.: 12/2025-26/IGIMS-Store.

आईजीआईएमएस : अब 24 घंटे आंख की सर्जरी और इलाज होगा, अलग से मॉड्यूलर ओटी बने

पटना | आईजीआईएमएस में आंख का इलाज अब 24 घंटे होगा। क्षेत्रीय चक्षु संस्थान के प्रभारी डॉ. विभूति प्रसन्न सिन्हा ने कहा कि इमरजेंसी के लिए अलग से दो ओटी बनाए गए हैं। मॉड्यूलर ऑपरेशन थिएटर के साथ यह अलग इमरजेंसी विंग रहेगा। गंभीर मरीज आएंगे तो उन्हें भटकना नहीं पड़ेगा। एक-दो सप्ताह में इसका उद्घाटन होगा। इस मॉड्यूलर ओटी में ट्रॉमा, एक्यूट आई डिजीज, आंख में चोट, अचानक रोशनी जाने, आंख में दर्द आदि के इलाज की व्यवस्था 24 घंटे रहेगी। हाल ही में शिफ्ट हुए नवनिर्मित भवन में यह सेवा मिलेगी। साथ ही इंडोर की व्यवस्था भी शुरू होने जा रही है। एक छत के नीचे सारी चिकित्सकीय सुविधाएं मिलेंगी। यहां एक साल में तीन लाख मरीजों के इलाज की क्षमता है। जबकि पुराने भवन में साल में करीब 1.5 लाख मरीजों का इलाज हो रहा था। नए भवन में कॉर्निया ट्रांसप्लांट यूनिट भी शिफ्ट कर दी गई है। इसके लिए अलग से चार अतिरिक्त ओपीडी काउंटर पूरी रात खुले रहेंगे।

आइजीआइएमएस : 24 घंटे होगा आंखों का इलाज

- आंखों में अचानक चोट, दर्द या सर्जरी की जरूर होगी, तो अब पूरी रात तैनात रहेंगे नेत्र रोग विशेषज्ञ
- इमरजेंसी सेवा के साथ ही इनडोर इलाज की व्यवस्था भी होने जा रही है

संवाददाता, पटना

इंदिरा गांधी आयुर्विज्ञान संस्थान (आइजीआइएमएस) के क्षेत्रीय चक्षु संस्थान में अब जल्द ही 24 घंटे इलाज व सर्जरी की सुविधा होगी. इसमें इसमें 174 बेड होंगे. इमरजेंसी की सुविधा बहाल होने से रात में भी आंख में किसी तरह की परेशानी होने पर भटकना नहीं पड़ेगा. आइजीआइएमएस के उपनिदेशक व क्षेत्रीय चक्षु संस्थान के प्रमुख डॉ विभूति प्रसन्न सिन्हा ने कहा कि नेत्र इमरजेंसी में ट्रॉमा, एक्यूट आइ डिजीज, आंख में अचानक चोट लगना, अचानक रोशनी चले जाना, आंख में दर्द आदि के इलाज की व्यवस्था अब 24 घंटे रहेगी. हाल ही में नये भवन में नेत्र विभाग को शिफ्ट किया गया है, जहां इमरजेंसी सेवा शुरू करने की तैयारी शुरू हो गयी है. यहां इनडोर इलाज की व्यवस्था भी शुरू होने जा रही है. एक छत के नीचे सारी चिकित्सकीय सुविधाएं मिलेंगी. सब कुछ ठीक रहा, तो अगले एक सप्ताह के अंदर यह सुविधा शुरू हो जायेगी.

सालाना तीन लाख मरीजों के इलाज की क्षमता

24 घंटे इमरजेंसी बहाल होने के साथ ही अब इलाज की क्षमता बढ़ा कर न लाख करने की है. यानी एक साल में तीन लाख मरीजों के इलाज की क्षमता होगी, जबकि पहले हर साल पुराने भवन में करीब 1.5 लाख मरीजों का इलाज किया जा रहा था. नये भवन में कॉर्निया ट्रांसप्लांट यूनिट को भी शिफ्ट कर दिया गया है. इसके लिए अलग से चार अतिरिक्त ओपीडी काउंटर पूरी रात खुले रहेंगे. शिफ्ट के अनुसार इन कर्मियों की ड्यूटी लगायी जायेगी.

नये भवन में नेत्र रोग विभाग शिफ्ट होने के बाद मरीजों की संख्या व आधुनिक सुविधाओं में वृद्धि हुई है. यहां 24 घंटे आंख के मरीजों के इलाज की तैयारी पूरी कर ली गयी है. इसके शुरू होने के बाद किसी भी तरह की दुर्घटना या इमरजेंसी होने पर मरीजों को सीधे यहां इमरजेंसी में भर्ती कर दिया जायेगा. ओपीडी के अलावा अगर रात में सर्जरी की जरूर पड़ती है, तो रात में ऑपरेशन भी कर दिया जायेगा. 24 घंटे ओटी व इमरजेंसी बहाल रहेंगी.

डॉ विभूति प्रसन्न सिन्हा, उपनिदेशक व चीफ क्षेत्रीय चक्षु संस्थान, आइजीआइएमएस

आईजीआईएमएस में 24 घंटे होगी आंखों की सर्जरी

- चार अतिरिक्त ओपीडी काउंटर पूरी रात खुलेंगे
- क्षेत्रीय चक्षु संस्थान में 24 घंटे इमरजेंसी चलेगी

पटना, प्रधान संवाददाता। आईजीआईएमएस के क्षेत्रीय चक्षु संस्थान (रियो) में अब 24 घंटे आंखों के इलाज की सुविधा मिलेगी। कुछ दिनों में यहां 24 घंटे की इमरजेंसी सेवा शुरू होगी। इससे रात में भी आंख में चोट या अन्य परेशानी होने पर मरीजों को इलाज के लिए भटकना नहीं होगा। वे यहां आकर अपना इलाज करा सकेंगे।

संस्थान के उपनिदेशक व रियो सेंटर के प्रभारी डॉ. विभूति प्रसन्न सिन्हा ने बताया कि नेत्र इमरजेंसी में ट्रॉमा, आंखों की गंभीर बीमारी, आंख में अचानक चोट, अचानक रोशनी जाने, आंख में दर्द आदि के इलाज की व्यवस्था अब 24 घंटे मिलेगी। अगले एक सप्ताह में रियो के नवनिर्मित भवन में ये सेवाएं शुरू होंगी। डॉ. विभूति ने बताया कि संस्थान के नेत्र रोग विभाग में इलाज की क्षमता प्रतिवर्ष तीन लाख तक करने की योजना है। नए भवन में कॉर्निया ट्रांसप्लांट यूनिट भी शिफ्ट कर दी गई है। इसके लिए अलग से चार अतिरिक्त ओपीडी काउंटर पूरी रात खुले रहेंगे। शिफ्ट के अनुसार यहां कर्मियों की ड्यूटी लगाई जाएगी।

घूस लेते सीडीपीओ दफ्तर की पर्यवेक्षिका गिरफ्तार

कलंक के खिलाफ

- खुसरूपुर का मामला, निगरानी ने पकड़ा
- आंगनबाड़ी सेविका की शिकायत पर कार्रवाई

पटना, हिन्दुस्तान ब्यूरो। निगरानी अन्वेषण ब्यूरो ने पटना जिले के खुसरूपुर बाल विकास परियोजना पदाधिकारी (सीडीपीओ) कार्यालय की महिला पर्यवेक्षिका राजश्री कुमारी को 3400 रुपये घूस लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया है। निगरानी की टीम ने बैकठपुर की आंगनबाड़ी सेविका मिन्तर कुमारी की शिकायत पर यह कार्रवाई की है।

आंगनबाड़ी सेविका ने आरोप लगाया था कि महिला पर्यवेक्षिका द्वारा क्रय पंजी पर हस्ताक्षर करने के एवज में रिश्वत की मांग की जा रही है। निगरानी ब्यूरो के सत्यापन में शिकायत सही पाये जाने पर कांड दर्ज करते हुए कार्रवाई शुरू की गयी। निगरानी डीएसपी अभिजीत कौर के नेतृत्व में गठित धावा दल ने बुधवार को जाल बिछाते हुए आरोपी पर्यवेक्षिका को रंगे हाथ घूस लेते हुए गिरफ्तार कर लिया। आरोपी को निगरानी के विशेष न्यायालय में पेश करने की कार्रवाई की जा रही है।